हंसता हुआ धर्म

मुल्ला नसरुद्दीन को खड़ा किया गया। मजिस्ट्रेट ने पूछा कि मुल्ला नसरुद्दीन, तुम गवाही देते हो कि इस आदमी ने नेता जी को ही उल्लू का पट्ठा कहा? मुल्ला ने कहा कि निश्चित, सौ प्रतिशत निश्चित बात है यह कि इसने नेता जी को ही उल्लू का पट्ठा कहा है! मजिस्ट्रेट ने कहा, तुम कैसे इतने निश्चित हो सकते हो? वहां पचास लोग और मौजूद थे, इसने किसी का नाम तो लिया नहीं। नसरुद्दीन ने कहा, नाम लिया हो कि नहीं लिया हो, पचास मौजूद हों, कि पांच सौ मौजूद हों, मगर वहां उल्लू का पट्ठा केवल एक था, वह नेता जी थे! इसने इन्ही को कहा है, मैं कसम खाकर कहता हूं। वहां कोई दूसरा था ही नहीं, यह कहेगा भी किसको?

नसरुद्दीन प्रतिदिन अपने गधे को सरहद के पार ले जाता था। उस पर घास लदी होती थी। सरहद के सिपाहियों के सामने वह स्वीकार करता था कि वह तस्कर है, इसलिए वे लोग उसकी रोज तलाशी लेते थे। उसकी घास उछालते, कभी जला देते तो कभी पानी में डालते। इधर नसरुद्दीन धनी से धनी होता जा रहा था।

फिर वह वहां से दूसरे देश में रहने गया। वर्षों बाद उसे सरहद की रक्षा करने वाले पुराने अफसरों में से एक मिला। उसने कुतूहलवश पूछा, 'नसरुद्दीन, तुम ऐसी कौन सी चीज की तस्करी करते थे कि तुम्हें कभी पकड़ नहीं सके?'

नसरुद्दीन ने कहा, 'गधों की।'

मुल्ला नसरुद्दीन एक बार पकड़ा गया। चोरी का मामला था। उसने चारों तरफ देखा। जूरी में बारह स्त्रियां थीं। उसने मेजिस्ट्रेट से कहा, 'मैं अपना अपराध स्वीकार करता हूं।' मजिस्ट्रेट ने कहा, 'लेकिन अभी हमने कुछ पूछा ही नहीं है। तुमने अपराध स्वीकार कर लिया!'

उसने कहा, 'अपने घर मैं एक औरत को धोखा नहीं दे पाता हूं, यहां बारह हैं। यह असंभव है। पहले से ही स्वीकार कर लेना ठीक है।'

मुल्ला नसरुद्दीन अपने बेटे को घूंसेबाजी सिखा रहा था। पड़ोसियों ने पूछा, 'यह क्या सिखा रहे हो!' उसने कहा, 'सिखाना जरूरी है। मुहल्ले में बदमाश लड़के हैं। स्कूल भी जाना पड़ता है। रास्ते में कलह भी हो जाती है। इसलिए घूंसेबाजी सिखा रहा हूं।'

किसी ने कहा, 'पर इससे तगड़े, मजबूत लड़के हैं, वे पहले से घूंसेबाजी सीखे हैं, उनके सामने यह क्या करेगा?'

मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा, 'क्या तुमने मुझे नासमझ समझा है? भागने की कला पहले ही सिखा चुका हूं कि जब अपने से मजबूत देखो, तो भाग ही खड़ा होना।'

मुल्ला नसरुद्दीन पर अदालत में मुकदमा था कि उसने गांव के सबसे सीधे-साधु आदमी को लूट लिया। मजिस्ट्रेट ने कहा कि नसरुद्दीन थोड़ी तो शर्म खाते। तुम्हें गांव में कोई और लुटने को न मिला, यह सीधा-सादा आदमी, यह जो गांव का सबसे सीधा-सादा आदमी है, यह एक नमूना है सतयुग का, इसको तुमने लूटा?

नसरुद्दीन ने कहा: मालिक, आप भी क्या बात करते हैं! इसको मैं न लूटूं तो किसको लूटूं? यह ही भर लुट सकता है इस गांव में, बाकी तो सब पहुंचे हुए लोग हैं। मेरी भी मजबूरी समझो। मैं और किसको लूटूं? और तो मुझे ही लूट लेंगे। यह एक ही बचा मेरे लिए तो। यह तो मेरे धन्यभाग कि एक सतयुगी भी है, नहीं तो मेरा तो किसी पर उपाय ही न चलेगा।